अध्याय- 7

हमारे आस-पास के बाजार

Market Around Us

इकाई- 5

बाजार

Market

# NCERT Based

## CLASS - VIIth

## (Polity)

By : Karan Sir

# इकाई - 5, अध्याय- 7

# हमारे आस-पास के बाजार

# Markets Around Us

By : Karan Sir

# Unit - 5 - Markets

## Chapter - 7- Markets Around Us

# हमारे आस-पास के बाज़ार

हम बाज़ार जाते हैं और बाज़ार से बहुत-सी चीजें खरीदते हैं, जैसे- सब्ज़ियाँ, साबुन, दंतमंजन, मसाले, ब्रेड, बिस्किट, चावल, दाल, कपड़ें, किताबें, कॉपियाँ, आदि। हम जो कुछ खरीदते हैं, यदि उन सब की सूची बनाई जाए, तो वह काफ़ी लंबी होगी। बाज़ार भी कई प्रकार के होते हैं, जहाँ हम अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए जाते हैं, जैसे – हमारे पड़ोस की गुमटी, साप्ताहिक हाट (बाज़ार), बड़े-बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और शॉपिंग मॉल। इस अध्याय में हम बाज़ार के इन्हीं प्रकारों को समझने की कोशिश करेंगे और यह जानने कि कोशिश करेंगे कि यहाँ बेची जाने वाली चीज़ें खरीदारों तक कैसे आती हैं, ये खरीदार कौन हैं, ये बेचने वाले कौन है? और इस सब के बीच कैसी और क्या समस्याएँ सामने आती हैं?

# Markets Around Us

We go to the market to buy many things – vegetables, soap, toothpaste, masala, bread, rice, dal, clothes, notebooks, biscuits, etc. If we make a list of the goods that we purchase, it would be really long. There are many kinds of markets that we may visit for our everyday needs: these can include shops, hawker's stalls in our neighbourhood, a weekly market, a large shopping complex, perhaps even a mall. In this chapter, we look at some of these markets and try to understand how the goods that are sold there reach buyers, who these buyers are, who these sellers are, and the sorts of problems they face.

HEAVY FUEL
MAXIM
TODAY

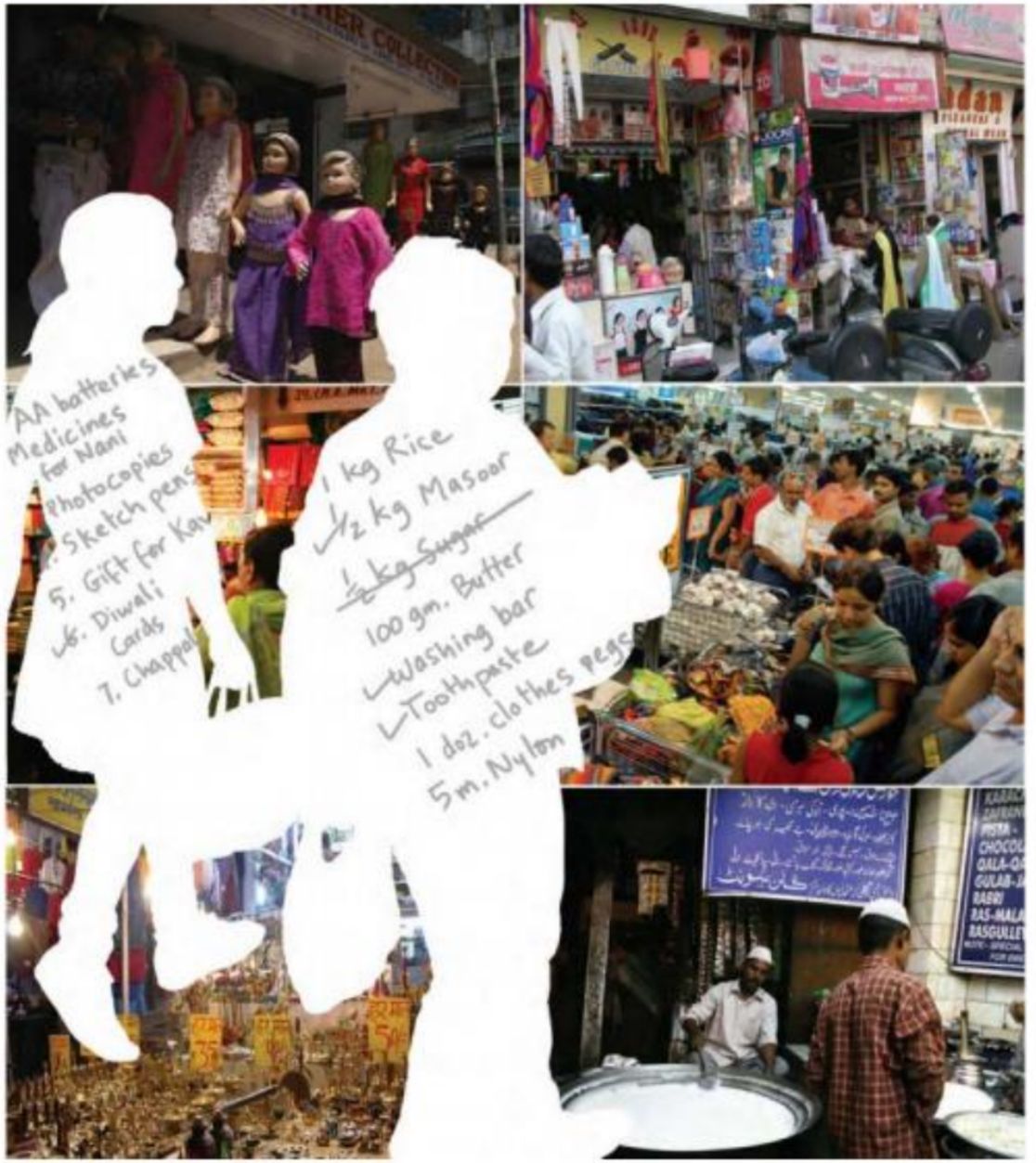
AA batteries
Medicines
for Nani
Photocopies
Sketch pens
5. Gift for Kav
6. Diwali
Cards
7. Chappal
1 kg Rice
½ kg Masoor
1 kg Sugar
100 gm. Butter
Washing bar
Toothpaste
1 doz. clothes pegs
5m. Nylon

लोग साप्ताहिक बाज़ारों में क्यों जाते हैं? तीन कारण बताइए।

इन साप्ताहिक बाज़ारों में दुकानदार कौन होते हैं? बड़े व्यापारी इन बाज़ारों में क्यों नहीं दिखते?

साप्ताहिक बाज़ारों में सामान सस्ते दामों में क्यों मिल जाता है?

एक उदाहरण देकर समझाइए कि लोग बाज़ारों में कैसे मोल-तोल करते हैं? क्या आप ऐसी स्थिति के बारे में सोच सकते हैं, जहाँ मोल-तोल करना अन्यायपूर्ण होगा?

Why do people go to a weekly market? Give three reasons.

Who are the sellers in a weekly market? Why don't we find big business persons in these markets?

Why are things cheap in the weekly market?

Explain with an example how people bargain in the market. Can you think of a situation where the bargain would be unfair?

## साप्ताहिक बाज़ार

**साप्ताहिक बाज़ार** का यह नाम ही इसीलिए पड़ा है, क्योंकि यह सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन लगता है। इस साप्ताहिक बाज़ार में रोज़ खुलनेवाली पक्की दुकानें नहीं होती हैं। व्यापारी दिन में दुकान लगाते हैं और शाम होने पर उन्हें समेट लेते हैं। अगले दिन वे अपनी दुकानें किसी और जगह पर लगाते हैं। देश-भर में ऐसे हज़ारों बाज़ार लगते हैं और लोग इनमें अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों की चीज़ें खरीदने आते हैं।

## Weekly market

A weekly market is so called because it is held on a specific day of the week. Weekly markets do not have permanent shops. Traders set up shops for the day and then close them up in the evening. Then they may set up at a different place the next day. There are thousands of such markets in India. People come here for their everyday requirements.

## समीर, रेडीमेड वस्त्रों का एक व्यापारी

समीर साप्ताहिक बाज़ार का एक छोटा व्यापारी है। वह शहर के एक बड़े व्यवसायी से कपड़े खरीदता है और सप्ताह भर में छः अलग-अलग जगहों के साप्ताहिक बाज़ारों में कपड़ों को बेचता है। समीर और दूसरे कपड़ा व्यापारी इकट्ठे आते-जाते हैं। इसके लिए वे किराए की मिनी वैन ले लेते हैं। उसके ग्राहक सामान्यतः आस-पास के ग्रामीण होते हैं। दीपावली, पोंगल या ऐसे ही त्यौहारों के मौकों पर वह अच्छा व्यवसाय कर लेता है।

## Sameer: Seller of clothes

Sameer is a small trader in the weekly market. He buys clothes from a large trader in the town and sells them in six different markets in a week. He and other cloth sellers move in groups. They hire a mini van for this. His customers are from villages that are near the marketplace. At festival times, such as during Deepavali or Pongal, he does good business.

साप्ताहिक बाज़ारों में बहुत-सी चीज़ें सस्ते दामों पर मिल जाती हैं। ऐसा इसलिए, कि जो पक्की दुकानें होती हैं, उन्हें अपनी दुकानों के कई तरह के खर्चे जोड़ने होते हैं। उन्हें दुकानों का किराया, बिजली का बिल, सरकारी शुल्क आदि देना पड़ता है। इन दुकानों पर काम करने वाले कर्मचारियों की तनख्वाह भी इन्हीं खर्चों में जोड़नी होती है। साप्ताहिक बाज़ारों में बेची जाने वाली चीज़ों को दुकानदार अपने घरों में ही जमा करके रखते हैं। इन दुकानदारों के घर के लोग

Many things in weekly markets are available at cheaper rates. This is because when shops are in permanent buildings, they incur a lot of expenditure – they have to pay rent, electricity, fees to the government. They also have to pay wages to their workers. In weekly markets, these shop owners store the things they sell at home. Most of them are helped by their family members and, hence, do not need to

अकसर इनकी सहायता करते हैं, जिससे इन्हें अलग से कर्मचारी नहीं रखने पड़ते। साप्ताहिक बाज़ार में एक ही तरह के सामानों के लिए कई दुकानें होती हैं, जिससे उनमें आपस में प्रतियोगिता भी होती है। यदि एक दुकानदार किसी वस्तु के लिए अधिक कीमत माँगता है, तो लोगों के पास यह विकल्प होता है कि वे अगली दुकानों पर वही सामान देख लें, जहाँ संभव है कि वही वस्तु कम कीमत में मिल जाए। ऐसी स्थितियों में खरीदारों के पास यह अवसर भी होता है कि वे मोल-तोल करके भाव कम करवा सकें।

hire workers. Weekly markets also have a large number of shops selling the same goods which means there is competition among them. If some trader were to charge a high price, people would move to another shop where the same thing may be available more cheaply or where the buyer can bargain and bring the price down.

साप्ताहिक बाज़ारों का एक फ़ायदा यह भी होता है कि ज़रूरत का सभी सामान एक ही जगह पर मिल जाता है। सब्ज़ियों, कपड़ों, किराना सामान से लेकर बर्तन तक सभी चीज़ें यहाँ उपलब्ध होती हैं। अलग-अलग तरह के सामान के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में जाने की ज़रूरत भी नहीं होती है। लोग अकसर उन बाज़ारों में जाना पसंद करते हैं, जहाँ सामान के विविध विकल्प उपलब्ध हों।

One of the advantages of weekly markets is that most things you need are available at one place. Whether you want vegetables, groceries or cloth items, utensils – all of them can be found here. You do not have to go to different areas to buy different things. People also prefer going to a market where they have a choice and a variety of goods.

## मोहल्ले की दुकानें

हमने देखा कि साप्ताहिक बाज़ार हमें कई तरह का सामान उपलब्ध करवाते हैं। बहरहाल हम अन्य तरह के बाज़ारों से भी सामान खरीदते हैं। ऐसी बहुत-सी दुकानें हमारे मोहल्ले में भी होती हैं, जो हमें कई तरह की सेवाएँ और सामान उपलब्ध करवाती हैं। हम पास की डेयरी से दूध, किराना व्यापारी से तेल-मसाले व अन्य खाद्य पदार्थ तथा स्टेशनरी के व्यापारी से कागज़-कलम या फिर दवाइयों की दुकान से दवाई भी खरीद सकते हैं। इस तरह की दुकानें अकसर पक्की और स्थायी होती हैं, जबकि सड़क किनारे फुटपाथ पर सब्ज़ियों के कुछ छोटे दुकानदार, फल विक्रेता और कुछ गाड़ी मैकेनिक आदि भी दिखाई देते हैं।

## Shops in the neighbourhood

We have seen that the weekly markets offer a variety of goods. However, we also buy things from other kinds of markets. There are many shops that sell goods and services in our neighbourhoods. We may buy milk from the dairy, groceries from departmental stores, stationery, eatables or medicines from other shops. Many of these are permanent shops, while others are roadside stalls such as that of the vegetable hawker, the fruit vendor, the mechanic, etc.

सुजाता और कविता एक दिन अपने मोहल्ले की दुकान से किराने का कुछ सामान खरीदने पहुँचीं। वे इस दुकान पर अकसर खरीदारी के लिए आती हैं। आज यहाँ भीड़ थी। दुकान मालकिन दो सहायकों की मदद से दुकान का काम संभाल रही थीं। जब सुजाता और कविता दुकान के अंदर पहुँचीं, तो सुजाता ने दुकान मालकिन को जरूरत के सामान की सूची बोल कर लिखवा दी। वे इनकी सूची के अनुसार सामान तोलने और पैक करवाने के लिए अपने कर्मचारियों को निर्देश देने लगीं। इस बीच कविता चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रही थी...

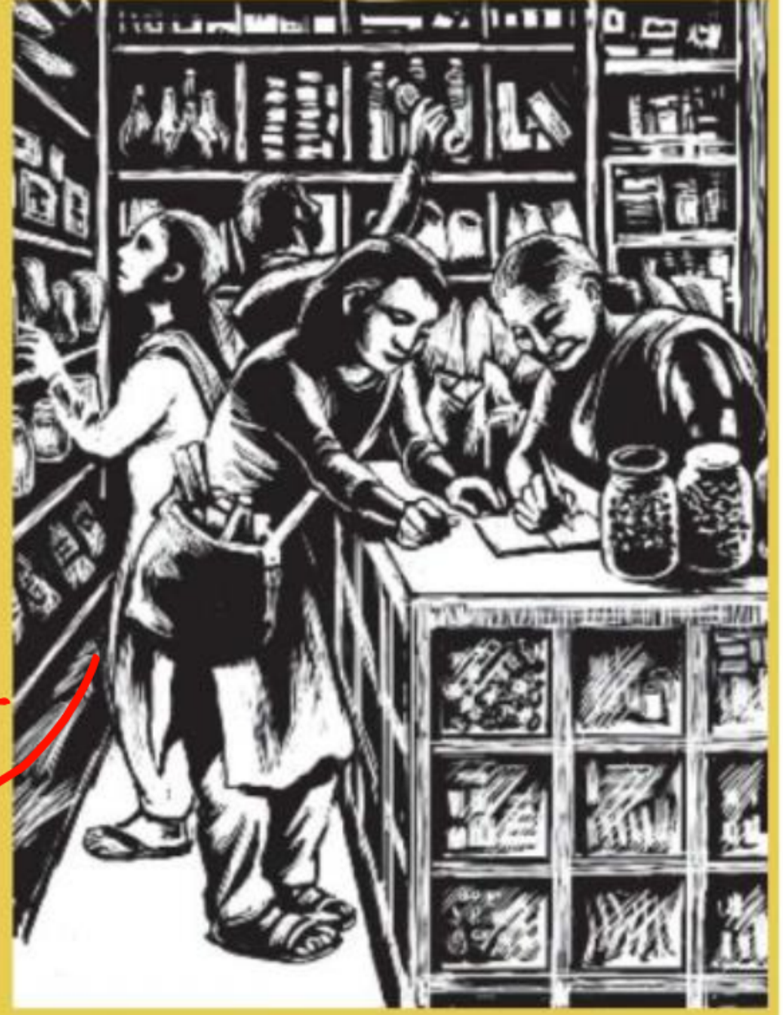

बाएँ हाथ की सबसे ऊपरी शेल्फ पर अलग-अलग ब्रांड की साबुन की टिकिया रखी थीं। दूसरी शेल्फों पर दंतमंजन, टेल्कम पाउडर, शैंपू, बाल के तेल आदि रखे थे। अलग-अलग ब्रांड के और अलग-अलग रंगों में सजे सामान मन लुभा रहे थे। फ़र्श पर कुछ बोरे पड़े हुए थे।

सारा सामान तोलने और बाँधने में करीब 20 मिनट लग गए। फिर सुजाता ने अपनी नोटबुक सामने कर दी। दुकान मालकिन ने नोटबुक में ₹3000 की संख्या दर्ज़ की और वापिस कर दी। उसने अपने बड़े रजिस्टर में भी यह संख्या लिख कर रख ली। अब सुजाता अपने भारी थैले लेकर बाहर निकली। अगले महीने के पहले हफ़्ते में उसके घर से दुकान का हिसाब चुका दिया जाएगा।

Sujata and Kavita were sent to buy groceries from their neighbourhood shop. This was the shop they usually went to. It was crowded today. The shop owner managed the shop herself with two helpers. When they managed to get into the shop, Sujata dictated a list to her. She in turn began asking her helpers to weigh and pack the items. Meanwhile Kavita looked around…

On the top left shelf there were different brands of detergent cakes. Another shelf had toothpastes, talcum powder, shampoo, hair oil. The different brands and different colours looked so attractive. On the floor lay a few sacks.

It took almost 20 minutes to weigh and pack all the groceries. Then Sujata showed her "notebook." The woman noted the amount of Rs.1550 in the notebook and gave it back. She also noted the amount in her big register. Then Sujata took the heavy bags out of the shop. Her family will pay for the purchases in the first week of next month.

सुजाता नोटबुक लेकर दुकान क्यों गई? क्या यह तरीका उपयोगी है? क्या इसमें कोई समस्या भी आ सकती है?

आपके मोहल्ले में अलग-अलग प्रकार की कौन-सी दुकानें हैं? आप उनसे क्या-क्या खरीदते हैं?

सड़क किनारे की दुकानों या साप्ताहिक बाज़ार में मिलने वाले सामान की तुलना में पक्की दुकानों से मिलने वाला सामान मँहगा क्यों होता है?

Why did Sujata carry a notebook? Do you think this system is useful? Can there be problems?

What are the different kinds of shops that you find in your neighbourhood? What do you purchase from them?

Why are goods sold in permanent shops costlier than those sold in the weekly markets or by roadside hawkers?

पड़ोस की दुकानें कई अर्थों में बहुत उपयोगी होती हैं। हमारे घरों के करीब तो वे होती ही हैं और हम सप्ताह के किसी भी दिन और किसी भी समय इन दुकानों पर जा सकते हैं। समान्यत: दुकानदार और खरीदार एक-दूसरे से परिचित भी हो जाते हैं और दुकानदार, ग्राहकों के लिए उधार भी देने को तैयार होते हैं। यानी कि आज खरीदे गए सामान का भुगतान बाद में भी करने की सुविधा होती है, जैसा कि सुजाता के उदाहरण में हमने देखा।

Shops in the neighbourhood are useful in many ways. They are near our home and we can go there on any day of the week. Usually, the buyer and seller know each other and these shops also provide goods on credit. This means that you can pay for the purchases later, as we saw in Sujata's case, for example.

आप क्या सोचते हैं, सुरक्षा कर्मचारी ने सुजाता और कविता को अंदर जाने से रोकना क्यों चाहा होगा? यदि कहीं किसी बाज़ार में कोई आपको ऐसी ही दुकान में अंदर जाने से रोके, तो आप क्या कहेंगे?

Why do you think the guard wanted to stop Kavita and Sujata from entering the shop? What would you say if someone stops you from entering a shop in a market?

अंजल मॉल एक पाँच-मंजिला शॉपिंग कॉम्प्लेक्स है। कविता और सुजाता इसमें लिफ्ट से ऊपर जाने और नीचे आने का आनंद ले रहीं थीं। यह काँच की बनी लगती थी और वे इसमें से बाहर का नज़ारा देखती हुई ऊपर-नीचे जा रहीं थीं। उन्हें यहाँ आइसक्रीम, बर्गर, पिज़्ज़ा आदि खाने की चीज़ें, घरेलू उपयोग का सामान, चमड़े के जूते, किताबें आदि तरह-तरह की दुकानों को देखना चमत्कृत कर रहा था।

मॉल के तीसरे तल पर घूमते हुए वे दोनों एक ब्रांडेड रेडीमेड कपड़ों की दुकान में पहुँच गईं। सुरक्षा कर्मचारी ने उन्हें कुछ इस तरह देखा कि वह इन्हें रोक देना चाहता हो, परंतु उसने कुछ कहा नहीं। उन्होंने कुछ कपड़े और उन पर लगी कीमत की पर्चियाँ देखीं। एक भी कपड़ा ₹3000 से कम का नहीं था। यह कीमत साप्ताहिक बाज़ार के कपड़ों की तुलना में लगभग पाँच गुना अधिक थी। सुजाता, कविता से फुसफुसाती हुई बोली "मैं तुम्हें एक दूसरी दुकान पर ले चलूँगी जहाँ अच्छी किस्म का कपड़ा ज़्यादा ठीक दामों पर मिल जाएगा।"

Anzal Mall is a five-floor shopping complex. Kavita and Sujata were enjoying going up and down in the lift. It seemed as if it was made of glass and they were able to see outside as they went up. It was fascinating to see so many different kinds of shops such as the ice-cream, burger, pizza and other food shops; shops full of home appliances; footwear and leather items as well as bookshops.

While wandering about on the third floor they entered a shop that was selling branded ready-made clothes. The security guard looked at them as if he wanted to stop them but he did not say anything. They looked at some dresses and then looked at the price tag. None of them was less than Rs 2,000, almost five times the weekly market price! Sujata whispered to Kavita, "I'll take you to another shop which has good quality ready-made clothes at more reasonable prices".

आपने ध्यान दिया होगा कि हमारे पड़ोस में भी कई तरह के दुकानदार होते हैं। कुछ तो पक्की दुकानों वाले होते हैं और कुछ सड़क किनारे दुकानें सजाकर सामान बेचते हैं।

You might have noticed that there are different kinds of sellers even in the neighbourhood markets. Some of them have permanent shops and others sell their goods on the roadside.

## शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और मॉल

इस प्रकार अभी हमने दो प्रकार के बाज़ार देखे पहला साप्ताहिक बाज़ार और दूसरा, पड़ोस की दुकानों का बाज़ार। शहरों में कुछ अन्य प्रकार के बाज़ार भी होते हैं, जहाँ एक साथ कई तरह की दुकानें होती हैं। इन्हें लोग शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के नाम से जानते हैं। अब तो कुछ शहरी इलाकों में आपको बहुमंज़िला वातानुकूलित दुकानें भी देखने को मिलेंगी, जिनकी अलग-अलग मंज़िलों पर अलग-अलग तरह की वस्तुएँ मिलती हैं। इन्हें **मॉल** कहा जाता है। इन शहरी दुकानों में आपको बड़ी-बड़ी कंपनियों का ब्रांडेड सामान भी मिलता है और कुछ बिना ब्रांड का सामान भी मिलता है। विज्ञापन वाले अध्याय में आपने पढ़ा था कि ब्रांडेड सामान जिसे कंपनियाँ बड़े-बड़े विज्ञापन देकर और क्वालिटी के दावे करके बेचती हैं, महँगा होता है। कंपनियाँ अपने ब्रांडेड उत्पादों को बड़े शहरी बाज़ारों और अपने विशेष शोरूमों में बेचने के लिए रखती हैं। बिना ब्रांड के उत्पादों की तुलना में इस ब्रांडेड सामान की कीमत का बोझ केवल कुछ लोग ही उठा पाते हैं।

ऐसा क्यों होता है कि लोग मॉल में दुकानदारों से मोल-तोल नहीं करते हैं; जबकि साप्ताहिक बाज़ारों में ऐसा खूब किया जाता है?

## Shopping complexes and malls

So far we have seen two kinds of marketplaces – weekly markets and markets in our neighbourhood. There are other markets in the urban area that have many shops, popularly called shopping complexes. These days, in many urban areas, you also have large multi-storeyed air-conditioned buildings with shops on different floors, known as malls. In these urban markets, you get both branded and non-branded goods. As you have read in the chapter on advertising, branded goods are expensive, often promoted by advertising and claims of better quality. The companies producing these products sell them through shops in large urban markets and, at times, through special showrooms. As compared to non-branded goods, fewer people can afford to buy branded ones.

Why do people not bargain in shops located in malls whereas they bargain in weekly markets?

आपको क्या लगता है, आपके मोहल्ले की दुकान में सामान कैसे आता है? पता लगाइए और कुछ उदाहरणों से समझाइए।

थोक व्यापारी की भूमिका ज़रूरी क्यों होती है?

How do you think your neighbourhood shop gets its goods? Find out and explain with some examples.

Why is a wholesale trader necessary?

## बाज़ारों की शृंखला

पहले हिस्से में आपने विभिन्न तरह के बाज़ारों के बारे में पढ़ा, जहाँ हम सामान खरीदने जाते हैं। क्या आप सोच सकते हैं कि ये सभी दुकानदार अपनी दुकानों के लिए सामान कहाँ से लेकर आते हैं? सामानों का उत्पादन कारखानों, खेतों और घरों में होता है, लेकिन हमं कारखानों और खेतों से सीधे सामान नहीं खरीदते हैं। चीज़ों का उत्पादन करने वाले भी हमें कम मात्रा में, जैसे – एक किलो सब्ज़ी या एक प्लास्टिक कप आदि बेचने में रुचि नहीं रखेंगे।

## Chain of markets

In the previous sections, you have read about different markets from where we buy goods. From where do you think shop-owners procure their goods? Goods are produced in factories, on farms and in homes. However, we don't buy directly from the factory or from the farm. Nor would the producers be interested in selling us small quantities such as one kilo of vegetables or one plastic mug.

वे लोग, जो वस्तु के उत्पादक और वस्तु के उपभोक्ता के बीच में होते हैं, उन्हें व्यापारी कहा जाता है। पहले थोक व्यापारी बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेता है। जैसे – सब्ज़ियों का थोक व्यापारी कुछ किलो सब्ज़ी नहीं खरीदता है बल्कि वह बड़ी मात्रा में 25 से 100 किलो तक सब्ज़ियाँ खरीद लेता है। इन्हें वह दूसरे व्यापारियों को बेचता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों व्यापारी होते हैं। व्यापारियों की लंबी शृंखला का वह अंतिम व्यापारी जो अंतत: वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है, खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है। यह वही दुकानदार होता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाज़ार या फिर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में सामान बेचता मिलता है।

The people in between the producer and the final consumer are the traders. The wholesale trader first buys goods in large quantities. For example, the vegetable wholesale trader will not buy a few kilos of vegetables, but will buy in large lots of 25 to 100 kilos. These will then be sold to other traders. In these markets, buying and selling takes place between traders. It is through these links of traders that goods reach faraway places. The trader who finally sells this to the consumer, is the retailer. This could be a trader in a weekly market, a hawker in the neighbourhood or a shop in a shopping complex.

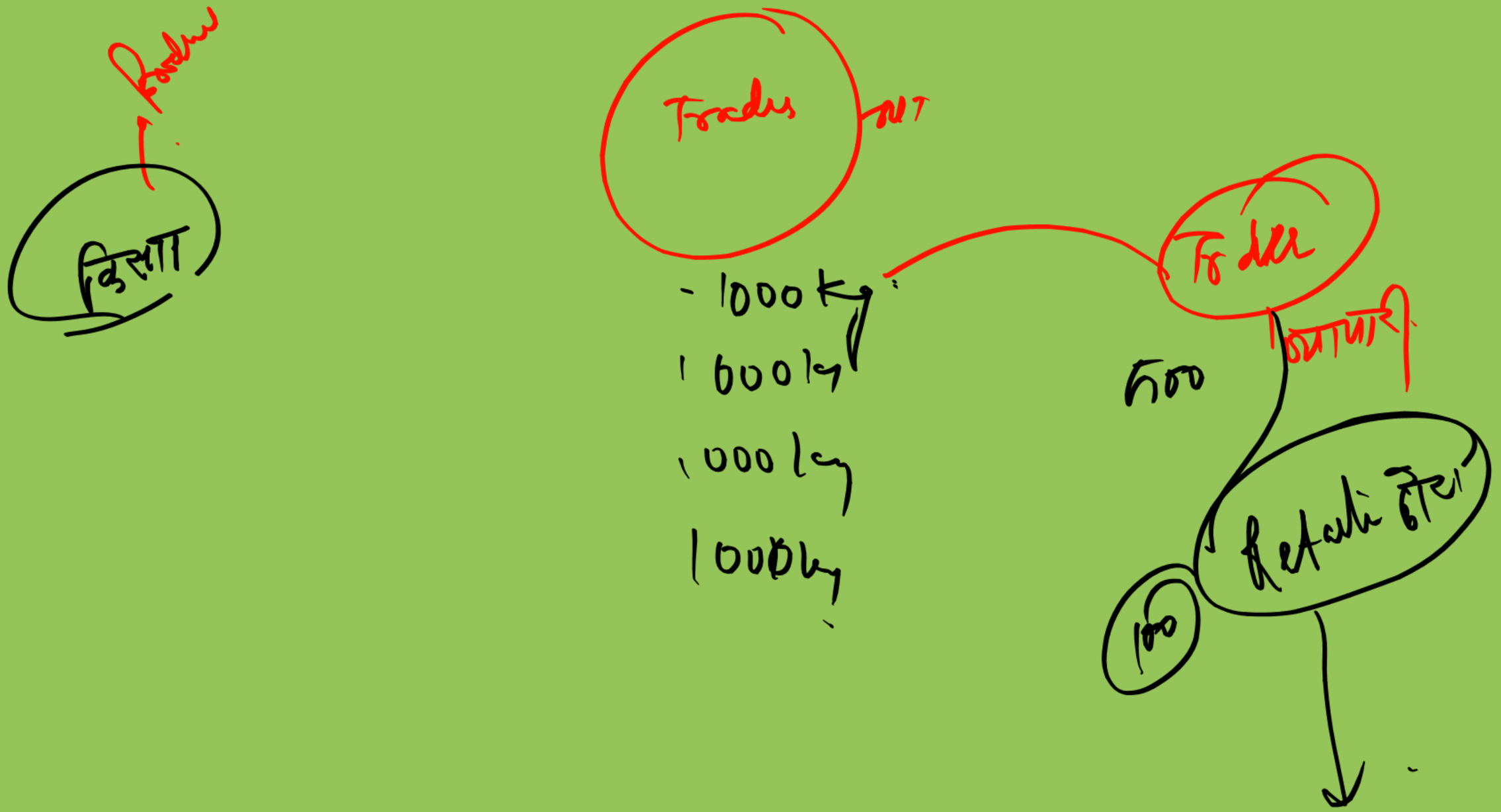

किसान
Traders
1000 kg
1000 kg
1000 kg
1000 kg
Trader
500
Retailer
100

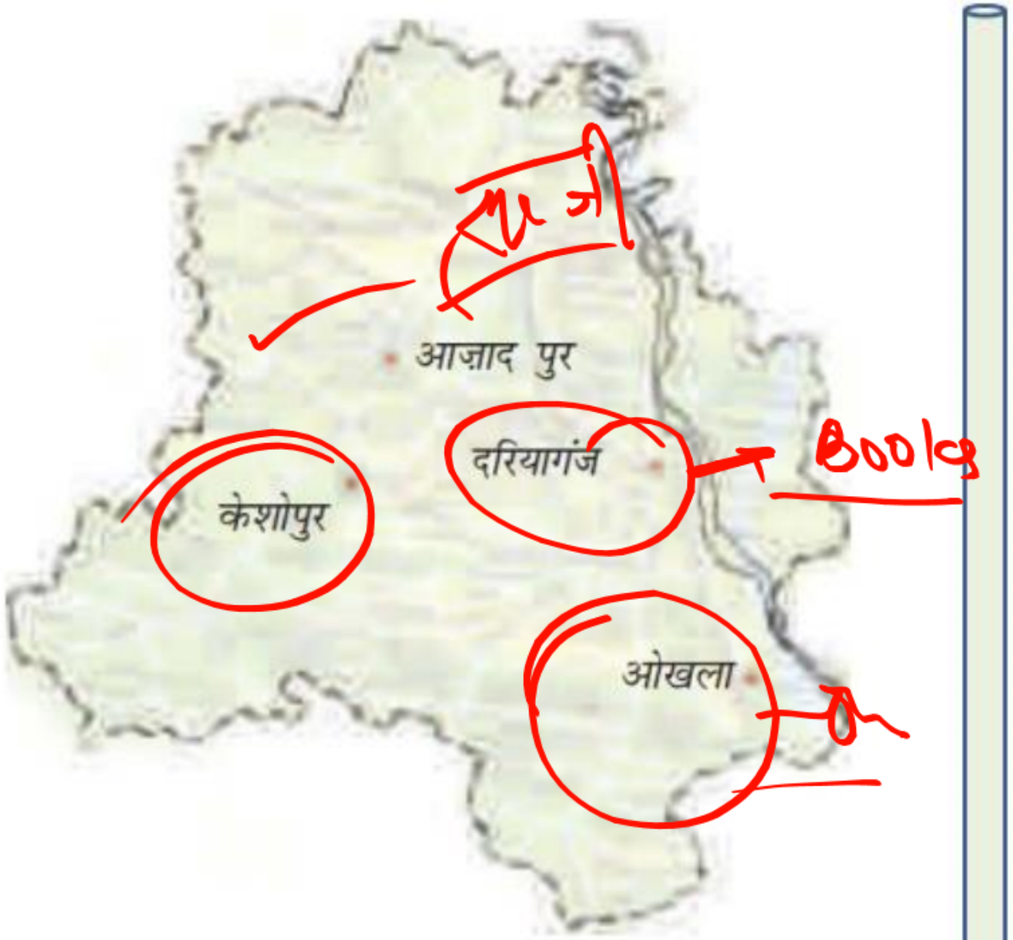


दिल्ली के 10 थोक बाज़ारों में से चार ऊपर दिए गए नक्शे में दिखाए गए हैं।

*The above map of Delhi shows four of the 10 wholesale markets in the city.*

हम इसे यहाँ दिए गए उदाहरणों से समझेंगे –

हर शहर में **थोक** बाज़ार का एक क्षेत्र होता है। यहाँ वस्तुएँ पहले पहुँचती हैं और यहीं से वे अन्य व्यापारियों तक पहुँचती हैं। सड़क किनारे की दुकान का छोटा व्यापारी, जिसके बारे में आपने पहले पढ़ा था, बड़ी संख्या में प्लास्टिक का सामान शहर के थोक व्यापारी से

We can understand this with the help of the following examples –

Every city has areas for wholesale markets. This is where goods first reach and are then supplied to other traders. The roadside hawker whom you read about earlier would have purchased a large quantity of plastic items from a wholesale trader in the town. He, in turn, might have bought these from another, even bigger wholesale trader in the city. The city

खरीदता है। हो सकता है कि वह बड़ा व्यापारी अपने से भी बड़े थोक व्यापारी से स्वयं सामान खरीदता हो। शहर का बड़ा थोक व्यापारी प्लास्टिक का यह सामान कारखाने से खरीदता है और उन्हें बड़े गोदामों में रखता है। इस तरह से बाज़ार की एक शृंखला बनती है। जब हम एक सामान खरीदते हैं, तब हम यह ध्यान नहीं देते हैं कि वह सामान किस-किस के पास से सफ़र करता हुआ हम तक पहुँचता है।

wholesale trader would have bought a large quantity of plastic items from the factory and stored them in a godown. In this way, a chain of markets is set up. When we purchase, we may not be aware of the chain of markets through which these goods travel before they reach us.

## आफ़ताब- शहर में सब्ज़ियों का थोक व्यापारी

आफ़ताब उन थोक व्यापारियों में से एक है, जो बहुत बड़ी मात्रा में खरीदारी करते हैं। उसका व्यवसाय सुबह लगभग 3 बजे से आरंभ होता है। इसी समय सब्ज़ियाँ, बाज़ार में पहुँचती हैं। यही समय है, जब सब्ज़ी बाज़ार या सब्ज़ी मंडी में गतिविधियाँ तेज हो रही होती हैं। आस-पास और दूर-दराज़ के खेतों से ट्रकों, मेटाडोर, ट्रैक्टर की ट्रॉलियों में सब्जियाँ यहाँ आने लगती हैं। जल्दी ही नीलामी की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। आफ़ताब भी इस नीलामी में शामिल होता है। सब्ज़ियाँ देखकर वह तय करता है कि आज वह क्या खरीदेगा। उदाहरण के लिए - वह आज 5 क्विंटल फूल गोभी और 10 क्विंटल प्याज़ खरीदता है। शहर में उसकी एक दुकान और गोदाम है, जहाँ वह सब्जियों को रखता और बेचता है। यहाँ वह फुटकर व्यापारियों को सब्ज़ियाँ बेचता है, जो सुबह छह बजे के आस-पास वहाँ आने लगते हैं। यहाँ से दिन-भर के लिए खरीदारी करने के बाद ये छोटे व्यापारी लगभग 10 बजे के आस-पास अपने क्षेत्र में अपनी दुकानें खोल लेते हैं।

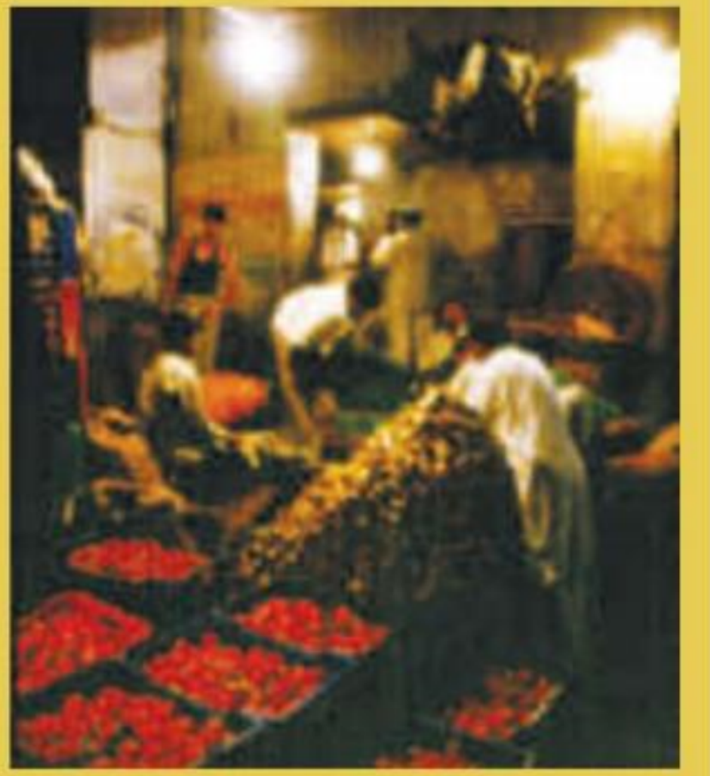

**Aftab – The wholesaler in the city**

Aftab is one of the wholesale traders who purchases in bulk. His business starts around 2 o'clock in the morning when vegetables reach the market. This is the time when the vegetable market or mandi starts buzzing with activity. The vegetables come in trucks, matadors, tractor trolleys from farms both near and far. Soon the process of auctions begins. Aftab participates in this auction and decides what he will buy. Today, for example, he bought 5 quintals of cauliflower, 10 quintals of onions. He has a shop in the market where he stores the vegetables that he has bought. From here he sells to hawkers and shopkeepers who start coming to the market around six in the morning. They have to organise their purchases so that they can start their shop for the day around ten in the morning.

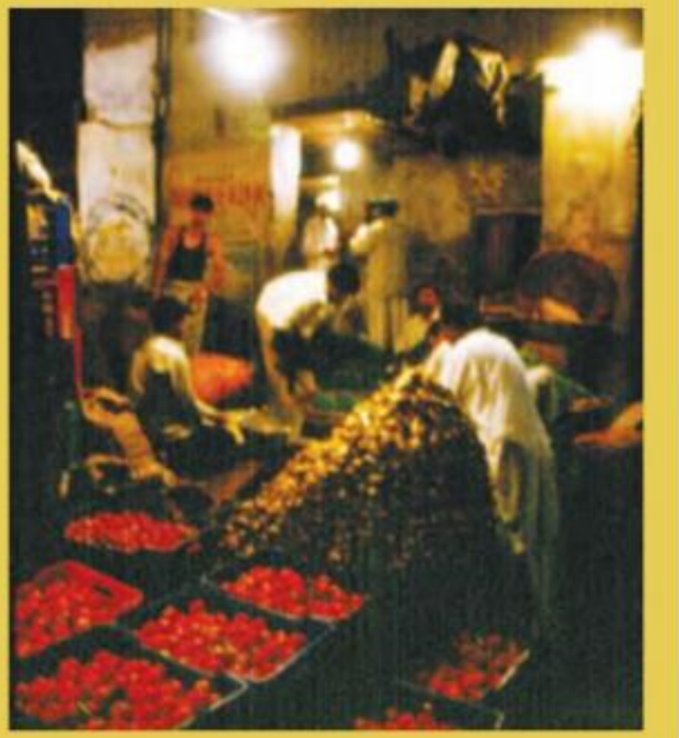

## हर जगह बाज़ार

हमने देखा कि अलग-अलग जगहों पर तरह-तरह के बाज़ार हैं, जहाँ तरह-तरह की वस्तुएँ खरीदी-बेची जाती हैं। ये बाज़ार अपनी-अपनी जगहों और समय पर अपनी तरह से काम करते हैं। कई बार तो यह भी आवश्यक नहीं होता है, कि आप सामान खरीदने के लिए बाज़ार जाएँ। अब तो तरह-तरह के सामान के लिए फोन या इंटरनेट पर भी ऑर्डर दे दिए जाते हैं और सामान आपके घर तक पहुँचा दिया जाता

## Markets everywhere

So far we have seen different marketplaces where people buy and sell a variety of goods and services. All these markets are in a specific locality and work in a particular manner and time. However, it is not always necessary that one has to go to the market to purchase goods. You can place orders for a variety of things through the phone and these days through the Internet, and the goods are delivered at your home. In clinics and nursing homes, you may have noticed sales representatives waiting for doctors. Such persons are also engaged in the selling of goods. Thus, buying and selling takes place in different ways, not necessarily through shops in the market.

है। आपने देखा होगा कि नर्सिंग होम और डॉक्टर के क्लीनिक में भी कुछ कंपनियों के प्रतिनिधि अपना सामान बेचने का कार्य कर रहे होते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि बेचना-खरीदना कई तरीकों से चलता रहता है। यह ज़रूरी नहीं है कि वह केवल बाज़ार की दुकानों से ही होता हो।

The markets that we looked at above are the ones that we recognise easily. However, there are markets that we may not be so aware of. This is because a

शहरी क्षेत्रों के लोग इन्टरनेट के ज़रिए घर से बाहर कदम रखे बिना ही बाज़ार में प्रवेश कर लेते हैं। वे अपने क्रेडिट कार्ड से 'ऑनलाइन' खरीदारी कर लेते हैं।

*People in urban areas can enter markets without stepping out of their homes via the Internet. They use their credit cards to make 'online purchases'.*

ये तो बाज़ार के वे रूप हैं, जो हमें सीधे तौर पर दिखाई देते हैं। ऐसे भी कुछ बाज़ार होते हैं, जिनके बारे में हमारी जानकारी कम ही होती है, क्योंकि यहाँ बिकने और खरीदी जाने वाली चीज़ें हम सीधे प्रयोग नहीं करते हैं। जैसे – एक किसान अपनी फ़सल की पैदावार बढ़ाने के लिए कुछ खाद और उर्वरकों का इस्तेमाल करता है। ये उर्वरक वह शहर की कुछ खास दुकानों से खरीदता है, जहाँ खाद के कारखानों से माल मँगाया जाता है। एक कार के कारखाने के द्वारा इंजन, गियर्स, पेट्रोल टंकियाँ, एक्सेल, पहिए आदि अलग-अलग कारखानों से खरीदे जाते हैं, परंतु इस सबसे बेखबर हम कार के शोरूम में अंतिम उत्पाद, कार को ही देखते हैं। सभी चीज़ों के बनाने और बेचने की ऐसी ही कहानी होती है।

large number of goods are bought and sold that we don't use directly. For example, a farmer uses fertilisers to grow crops that he purchases from special shops in the city and they, in turn get them from factories. A car factory purchases engine, gears, petrol tanks, axles, wheels, etc. from various other factories. We don't usually see all the buying and selling, but only the final product – the car in the showroom. The story is similar for any other good.

एक कारखाने में जोड़ी जा रही है कार

*A car being put together in a factory.*

## बाज़ार और समानता

इस अध्याय में हमने अपने आस-पास के कुछ बाज़ारों पर नज़र डाली। हमने साप्ताहिक बाज़ार से लेकर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स तक की दुकानों और दुकानदारों को देखा। इन दोनों दुकानदारों में बड़ा अंतर है। एक छोटी पूँजी से व्यवसाय करने वाला दुकानदार है,

## Markets and equality

In this chapter, we have looked at shop owners in a weekly market and those in a shopping complex. They are very different people. One is a small trader with little money to run the shop whereas the other is able to spend a lot of money to set up the shop. They also earn unequal amounts. The weekly market

*Malls, like the one above, sell expensive and branded goods.*

जबकि दूसरा अपनी दुकान के लिए बड़ी पूँजी खर्च कर सकता है। इनकी आमदनी भी अलग-अलग होती है। साप्ताहिक बाज़ार का छोटा दुकानदार शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के व्यापारी की तुलना में बहुत कम लाभ कमा पाता है। इसी तरह खरीदारों की भी अलग-अलग स्थितियाँ हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सबसे सस्ता मिलने वाला सामान भी खरीद पाने की स्थिति में नहीं हैं, जबकि दूसरी ओर लोग मॉलों में महँगी खरीदारी करने में व्यस्त रहते हैं। इस तरह कुछ हद तक अन्य कारणों के अलावा हमारी आर्थिक स्थिति ही यह तय करती है कि हम किन बाज़ारों में खरीदार या दुकानदार हो सकते हैं।

trader earns little compared to the profit of a regular shop owner in a shopping complex. Similarly, buyers are differently placed. There are many who are not able to afford the cheapest of goods while others are busy shopping in malls. Thus, whether we can be buyers or sellers in these different markets depends, among other things, on the money that we have.

हमने सामान के उत्पादन से लेकर, हम तक पहुँचने से बनने वाली **बाज़ारों की शृंखला** को समझा। इस शृंखला से ही यह संभव होता है कि एक जगह उत्पादित होने वाला सामान, लोगों के लिए हर जगह उपलब्ध हो जाए। वस्तुओं के बिकने से वस्तुओं का उत्पादन सीधे जुड़ा होता है। बनी हुई चीज़ों के बिकने से ही लोगों को रोज़गार मिलता है और उत्पादन भी बढ़ाया जाता है, परंतु क्या इससे शृंखला के प्रत्येक स्तर पर लाभ के समान अवसर मिलते हैं? आगे 'एक कमीज़ की कहानी' अध्याय में हम इस सवाल को समझने का प्रयास करेंगे।

We have also examined the chain of markets that is formed before goods can reach us. It is through this chain that what is produced in one place reaches people everywhere. When things are sold, it encourages production and new opportunities are created for people to earn. However, do they offer equal opportunities? We will try to understand this through the story of a shirt in the next chapter.

## अभ्यास

1. एक फेरीवाला, किसी दुकानदार से कैसे भिन्न है?

2. निम्न तालिका के आधाार पर एक साप्ताहिक बाज़ार और एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की तुलना करते हुए उनका अंतर स्पष्ट कीजिए।

## EXERCISES

1. In what ways is a hawker different from a shop owner?

2. Compare and contrast a weekly market and a shopping complex on the following:

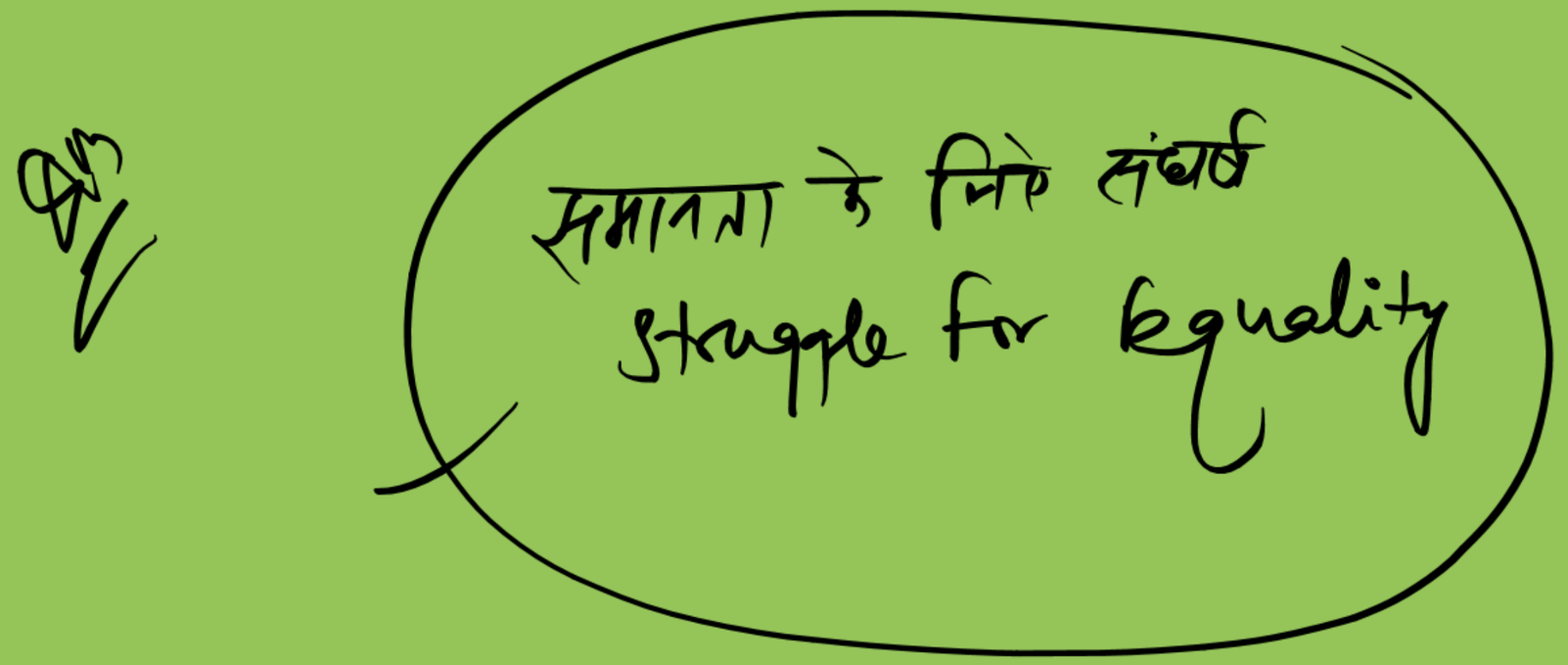
समानता के लिए संघर्ष
Struggle for Equality

| बाज़ार | बेची जाने वाली वस्तुओं के प्रकार | वस्तुओं का मूल्य | विक्रेता | ग्राहक |
|---|---|---|---|---|
| साप्ताहिक बाज़ार | | | | |
| शॉपिंग कॉम्प्लेक्स | | | | |

| Market | Kind of goods sold | Prices of goods | Sellers | Buyers |
|---|---|---|---|---|
| Weekly market | | | | |
| Shopping complex | | | | |

3. स्पष्ट कीजिए कि बाज़ारों की शृंखला कैसे बनती है? इससे किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है?

4. सब लोगों को बाज़ार में किसी भी दुकान पर जाने का समान अधिकार है। क्या आपके विचार से महँगे उत्पादों की दुकानों के बारे में यह बात सत्य है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

5. बाज़ार में जाए बिना भी खरीदना और बेचना हो सकता है। उदाहरण देकर इस कथन की व्याख्या कीजिए।

3. Explain how a chain of markets is formed. What purpose does it serve?

4. 'All persons have equal rights to visit any shop in a marketplace.' Do you think this is true of shops with expensive products? Explain with examples.

5. 'Buying and selling can take place without going to a marketplace.' Explain this statement with the help of examples.

## शब्द-संकलन

**साप्ताहिक बाज़ार** – ये बाज़ार नियमित बाज़ार नहीं होते हैं वरन् एक नियत स्थान पर सप्ताह में एक या दो बार लगाए जाते हैं। इन बाज़ारों में घरेलू सामान की लगभग सभी चीज़े बिकती हैं, जैसे- सब्ज़ी से लेकर कपड़े और बर्तन आदि।

**मॉल** – यह चारों ओर से घिरा हुआ दुकानदारी का स्थान होता है। इसकी इमारत बहुत बड़ी होती है, जिसमें कई मंजिलें, दुकानें, रेस्तराँ और कभी-कभी सिनेमाघर तक होते हैं। इन दुकानों में प्राय: ब्रांडों वाले उत्पाद बिकते हैं।

**थोक** – इसका आशय बहुत बड़ी मात्रा में खरीदना और बेचना होता है। अधिकांश उत्पादों जिनमें सब्ज़ी, फल और फूल आदि भी सम्मिलित हैं, के अपने-अपने विशेष थोक बाज़ार होते हैं।

**बाज़ारों की शृंखला** – यह बाज़ारों की एक शृंखला है, जो परस्पर एक-दूसरे से कड़ियों की तरह जुड़ी होती है, क्योंकि उत्पाद एक बाज़ार से होते हुए दूसरे बाज़ार में पहुँचते हैं।

## Glossary

**Weekly market:** These markets are not daily markets but are to be found at a particular place on one or maybe two days of the week. These markets most often sell everything that a household needs ranging from vegetables to clothes to utensils.

**Mall:** This is an enclosed shopping space. This is usually a large building with many floors that has shops, restaurants and, at times, even a cinema theatre. These shops most often sell branded products.

**Wholesale:** This refers to buying and selling in large quantities. Most products, including vegetables, fruits and flowers have special wholesale markets.

**Chain of markets:** A series of markets that are connected like links in a chain because products pass from one market to another.

# धन्यवाद

अध्याय- 9

समानता के लिए संघर्ष

Struggles for Equality

# NCERT Based

## CLASS - VIIth (Polity)

भारतीय लोकतंत्र में समानता

Equality in Indian Democracy

By : Karan Sir

समानता

# Chapter - 9

# समानता के लिए संघर्ष

# Struggles for Equality

joothan

# समानता के लिए संघर्ष

इस पुस्तक में अभी तक आपने कांता, अंसारी दंपति, मेलानी और स्वप्ना जैसे लोगों के बारे में पढ़ा। इन सब की कहानियों में जो बात समान है, वह यह कि उनके साथ असमानता का व्यवहार किया गया। ऐसी स्थितियों में लोग क्या कर सकते हैं? इतिहास में इस बात के अनेक उदाहरण हैं, जहाँ लोग असमानताओं के विरुद्ध और न्याय के लिए संघर्ष करने के लिए एक साथ आ खड़े हुए। क्या अध्याय 1 की रोज़ा पार्क्स की कहानी आपको याद है? क्या अध्याय 5 में स्त्री आंदोलनों पर पढ़े, चित्र लेख आपको ध्यान हैं? इस अध्याय में आप कुछ ऐसी कोशिशों के बारे में पढ़ेंगे, जिनके द्वारा लोगों ने असमानता के विरुद्ध अपनी लड़ाई लड़ी।

# Struggles for Equality

In this book, you have read about people like Kanta, the Ansaris, Melani and Swapna. The thread that connects all of these lives is that they have been treated unequally. What do people do when they face such inequalities? History is full of examples of persons who have come together to fight against inequality and for issues of justice. Do you recall the story of Rosa Parks in Chapter 1? Do you remember the photo-essay on the women's movement in Chapter 5? In this chapter you will learn about some of the ways in which people have struggled against inequality.

भारत का संविधान हर भारतीय नागरिक को समान दृष्टि से देखता है। आप पुस्तक के पहले हिस्से में पढ़ ही चुके हैं कि राज्य और उसके कानून की दृष्टि में किसी भी व्यक्ति के साथ उसकी जाति, लिंग, धर्म तथा उसके अमीर या गरीब होने के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता है। देश के हर वयस्क नागरिक को चुनावों के दौरान समान रूप से मतदान करने का अधिकार है। मताधिकार की ताकत के ज़रिए ही जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती या बदलती है।

As you have already read in this book, the Indian Constitution recognises all Indians as equal before the law and states that no person can be discriminated against because of their religion, sex, caste or whether they are rich or poor. All adults in India have the equal right to vote during elections and this 'power over the ballot box' has been used by people to elect or replace their representatives.

'मताधिकार की ताकत' से आप क्या समझते हैं? इस पर आपस में विचार कीजिए।

What do you think is meant by the expression 'power over the ballot box'? Discuss.

मताधिकार से हमारे भीतर समानता का भाव विकसित होता है, क्योंकि हमारे भी वोट की कीमत उतनी ही है जितनी किसी भी और व्यक्ति के वोट की। लेकिन यह भाव, अधिकतर लोगों के जीवन को नहीं छू पाता है। आपने पहले के अध्यायों में पढ़ा है कि कैसे स्वास्थ्य सेवाओं में निजीकरण बढ़ रहा है और सरकारी अस्पतालों के लापरवाही वाले रवैये ने कांता, हकीम शेख और अमन जैसे अत्यंत गरीब लोगों के लिए अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं को कठिन बना दिया है। ये वे लोग हैं जो महँगी निजी सवास्थ्य सेवाओं का बोझ नहीं उठा सकते।

But this feeling of equality that the ballot box provides, because the vote of one person is as good as that of another, does not extend to most people's lives. As you have read, the increasing privatisation of health services and the neglect of government hospitals have made it difficult for most poor people like Kanta, Hakim Sheik and Aman to get good quality health care. These people do not have the resources to afford expensive private health services.

इसी तरह देखें, एक बूढ़ी औरत जो घर पर अच्छा अचार बनाती है बड़ी कंपनियों के लंबे-चौड़े विज्ञापन खर्च और अनेक संसाधनों के सामने कमज़ोर हो जाती है और उनसे पिछड़ जाती है। स्वप्ना के पास भी पर्याप्त संसाधनों की कमी है और इसीलिए उसे अपनी रूई की फ़सल उगाने के लिए साहूकार से उधार लेना पड़ता है। यही कारण है कि उसे मज़बूरी में अपनी अच्छी फसल को कम कीमत

Similarly, the man who sells juice does not have the resources to compete with all of the major companies who sell branded drinks through expensive advertising. Swapna does not have sufficient resources to grow cotton and, so, has to take a loan from the trader to grow her crop. This

में बेचना पड़ता है। देशभर में मिलानी की तरह से घरेलू काम करने वाली लाखों महिलाएँ हैं, जो लगातार मेहनत से दूसरों के घरों का काम करती हैं। इसके बाद भी वे अपमानित होने को विवश हैं क्योंकि वे संसाधनों के अभाव में स्वयं का कोई काम नहीं कर पातीं हैं। गरीबी और संसाधनों का अभाव आज भी भारतीय समाज में विषमता और असमानता के सबसे बड़े कारणों में से एक है।

forces her to sell her cotton at a lower price. Melani, like the millions of domestic workers across the country, is forced to endure the insults and hardship of working as a domestic help because she has no resources to set up something on her own. **Poverty and the lack of resources continue to be a key reason why so many people's lives in India are highly unequal.**

Social - सामाजिक

Equality → आर्थिक Economical

राजनीतिक Political

Political

दूसरी ओर अंसारी दंपति को संसाधनों के न होने या कम होने के कारण असमानता नहीं झेलनी पड़ी। वास्तव में, जबकि उनके पास किराया देने के लिए पर्याप्त पैसे थे, तब भी वे एक मकान पाने के लिए महीने भर भटकते रहे। लोग उनके धर्म के कारण उन्हें मकान देने से हिचकते रहे। ठीक इसी प्रकार स्कूल के अध्यापकों ने ओमप्रकाश वाल्मीकि से स्कूल का मैदान महज़ इसीलिए साफ़ करवाया क्योंकि वे 'दलित' थे। आपने इसी पुस्तक में पढ़ा है कि

On the other hand, the Ansaris were discriminated against not because they did not have the resources. In fact, despite having the money to pay the required rent, they were not able to find an apartment for over a month. People were reluctant to lease them an apartment because of their religion. Similarly, the main reason that the teachers forced Omprakash Valmiki to sweep the school yard was because he was *Dalit*. You've also read that the work women do

महिलाओं के द्वारा किए गए काम अकसर ही पुरुषों के कामों की तुलना में तुच्छ माने जाते हैं। इन सभी के साथ किए जाने वाले भेदभाव का प्राथमिक कारण यह था वे किसी खास सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के थे या वे महिलाएँ थीं। धर्म, जाति और लिंग वे कुछ महत्त्वपूर्ण कारक हैं, जिनके आधार पर आज भी भारत में लोगों से असमानता का व्यवहार किया जाता है।

is often considered of less value than that done by the men. All of these persons are discriminated against primarily because of their social and cultural background as well as because they are women. **Discrimination on the basis of a person's religion, caste and sex is another significant factor for why people are treated unequally in India.**

भारत में यह एक वास्तविकता है कि जो गरीब हैं, सामान्यत: दलित, आदिवासी और मुस्लिम समुदाय के हैं और इनमें से भी विशेषत: महिलाएँ हैं।

*In India, it is the case that the poor consist of a majority of members of Dalit, Adivasi and Muslim communities and are often women.*

2011 की जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि हमारी जनसंख्या में 48.5 प्रतिशत महिलाएँ हैं, 14.2 प्रतिशत मुसलमान हैं, 16.6 प्रतिशत दलित हैं और 8.6 प्रतिशत आदिवासी हैं।

*According to the 2001 Census data women form 48 per cent of the population, Muslims form 13 per cent of the population, Dalits form 16 per cent and Adivasis 8 per cent.*

गरीबी, मानवीय गरिमा का अभाव और कुछ विशेष समुदायों के प्रति अपमान जैसे कारक अकसर ऐसे मिले-जुले ढंग से सामने आते हैं कि यह तय करना कठिन हो जाता है कि कहाँ एक तरह की असमानता खत्म होती है और कहाँ दूसरी असमानता शुरू हो जाती है। आपने पढ़ा है कि दलित, आदिवासी और मुस्लिम लड़कियों में पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वालों की संख्या बहुत अधिक है। यह स्थिति गरीबी, सामाजिक असमानता और इन समुदायों के लिए अच्छी स्कूल सुविधाओं के अभाव जैसे कई मिले-जुले कारणों से पैदा हुई है।

Often, poverty and lack of dignity and respect for certain communities and groups come together in such powerful ways that it is difficult to identify where one aspect of inequality ends and the other begins. As you have read, *Dalit*, *Adivasi* and Muslim girls drop out of school in large numbers. This is a combined outcome of poverty, social discrimination and the lack of good quality school facilities for these communities.

## समानता के लिए संघर्ष

दुनिया भर के तमाम समुदायों, गाँवों और शहरों में आप देखते होंगे कि कुछ लोग समानता के लिए किए गए संघर्षों के कारण सम्मान से पहचाने जाते हैं। ये वे लोग हैं, जो अपने साथ या अपने सामने किए जा रहे किसी भेदभाव के विरुद्ध उठ खड़े हुए। हम इनका सम्मान इसलिए भी करते हैं कि इन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को उसकी मानवीय गरिमा के साथ स्वीकार किया और सदैव इसे धर्म और समुदाय के ऊपर माना। इन्हें लोग बहुत विश्वास के साथ अपनी समस्याओं के समाधान के लिए बुलाते हैं।

## Struggles for equality

Throughout the world – in every community, village, city and town–you will find that there are some people who are known and respected because of their fight for equality. These people may have stood up against an act of discrimination that they faced or which they witnessed. Or they may be well-respected because they treat all persons with dignity and are, therefore, trusted and called upon to resolve issues in the community.

अकसर समानता के किसी विशेष मुद्दे को लेकर संघर्ष करने वाले व्यक्ति समाज में एक महत्त्वपूर्ण पहचान बना लेते हैं, क्योंकि समता की लड़ाई में बड़ी संख्या में लोग उनके साथ हो जाते हैं। भारत में ऐसे अनेक संघर्ष याद किए जा सकते हैं, जहाँ पर लोग ऐसे मुद्दों के लिए लडने को आगे आए, जो उन्हें महत्त्वपूर्ण लगते थे।

Often, some of these persons become more widely recognised because they have the support or represent large numbers of people who have united to address a particular issue of inequality. In India, there are several struggles in which people have come together to fight for issues that they believe are

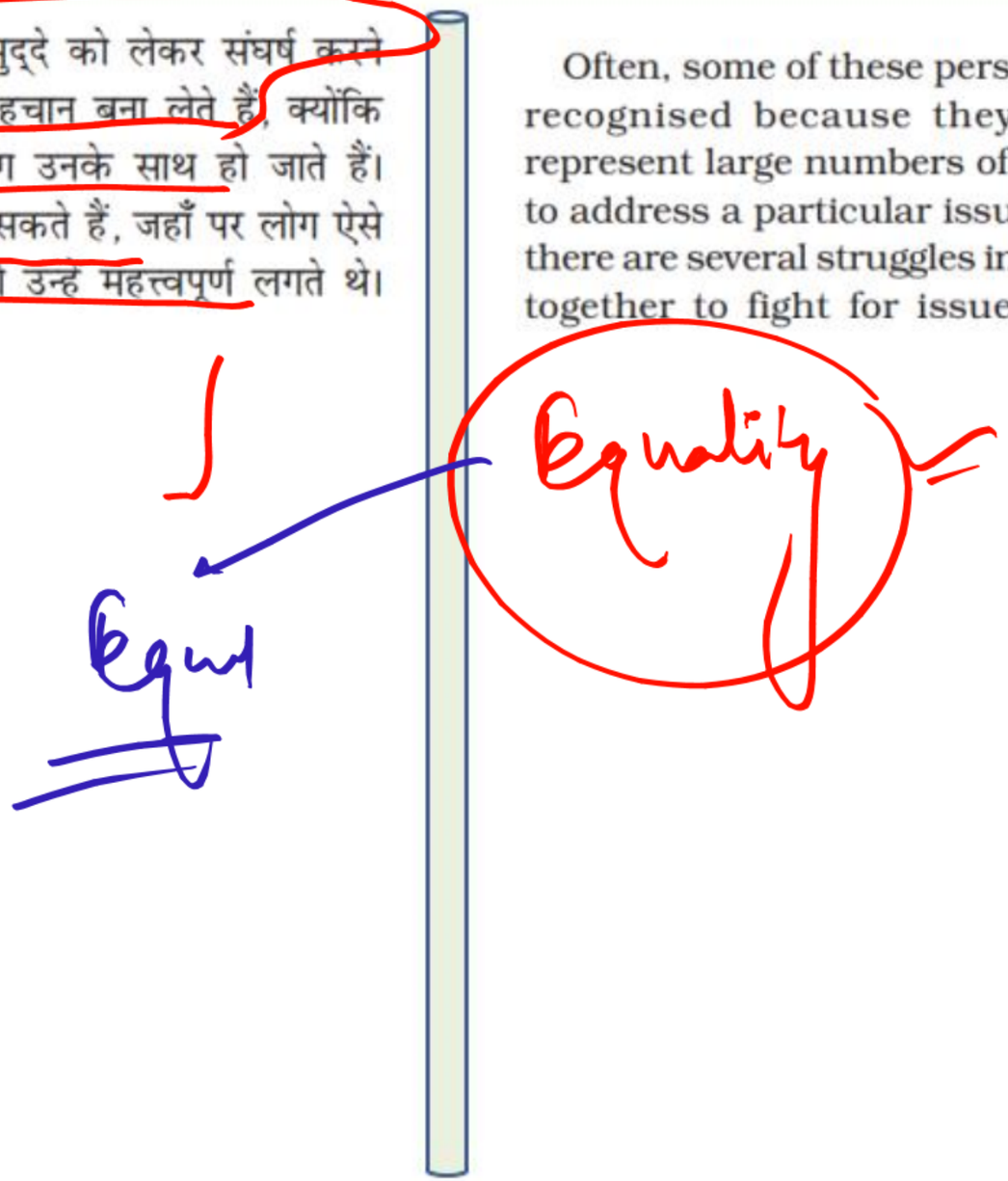

अध्याय 5 में आपने पढा कि कैसे और किन तरीकों से समानता के लिए महिलाओं का आंदोलन खड़ा हुआ। मध्य प्रदेश का 'तवा मत्स्य संघ' ऐसा ही दूसरा उदाहरण है, जहाँ लोग अपने अधिकार के लिए साथ खड़े हुए। ऐसी तमाम संघर्ष गाथाएँ हमारे पास हैं, जिनमें बीड़ी मज़दूरों, मछुआरों, खेतिहर मज़दूरों, झुग्गीवासियों के समूहों ने अपनी तरह से न्याय के लिए लड़ाइयाँ लड़ीं। ऐसे तमाम प्रयास भी हमारे सामने हैं जहाँ लोगों ने मिल-जुलकर संसाधनों पर नियंत्रण करने के लिए सहकारी संगठन खड़े किए।

important. In Chapter 5, you read about the methods used by the women's movement to raise issues of equality. The Tawa Matsya Sangh in Madhya Pradesh is another example of people coming together to fight for an issue. There are many such struggles such as those among *beedi* workers, fisherfolk, agricultural labourers, slum dwellers and each group is struggling for justice in its own way. There are also many attempts to form cooperatives or other collective ways by which people can have more control over resources.

## तवा मत्स्य संघ

जब जंगल के बड़े क्षेत्रों को जानवरों के लिए अभ्यारण्य घोषित कर दिया जाता है और बड़े बाँधों का निर्माण किया जाता है तो हज़ारों लोग विस्थापित होते हैं। पूरे के पूरे गाँवों के लोगों को अपनी जड़ों को छोड़कर कहीं और नए घर बनाने और नयी ज़िंदगी आरंभ करने के लिए मज़बूर कर दिया जाता है। इन विस्थापितों में से अधिकांश लोग गरीब होते हैं। शहरी क्षेत्रों में भी वे बस्तियाँ जहाँ गरीब रहते हैं, उन्हें हटा दिया जाता है। इनमें से कुछ को शहर के बाहरी इलाकों में दुबारा बसाया जाता है। इस सारी कवायद में न सिर्फ हटाए गए लोगों के काम-धंधे प्रभावित होते हैं, बल्कि शहर में स्थित स्कूलों से दूर हो जाने की वज़ह से इन बस्तियों के बच्चों की पढ़ाई भी अकसर गंभीर रूप से प्रभावित होती है।

## Tawa Matsya Sangh

When dams are built or forest areas declared sanctuaries for animals, thousands of people are displaced. Whole villages are uprooted and people are forced to go and build new homes, start new lives elsewhere. Most of these people are poor. In urban areas too, *bastis* in which poor people live are often uprooted. Some of them are relocated to areas outside the city. Their work as well as their children's schooling is severely disrupted because of the distance from the outskirts of the city to these locations.

लोगों और समुदायों का विस्थापन हमारे देश में एक बड़ी समस्या का रूप ले चुका है। ऐसे में कई बार लोग संगठित होकर इसके विरुद्ध लड़ाई के लिए सामने आते हैं। देश में ऐसे बहुत-से संगठन हैं, जो विस्थापितों के हक की लड़ाई लड़ रहे हैं। इस अध्याय में हम 'तवा मत्स्य संघ' के बारे में पढ़ेंगे जो मछुआरों की सहकारी समितियों का एक संघ है और सतपुड़ा के जंगलों से विस्थापित लोगों के अधिकारों के लिए लड़ रहा है।

This displacement of people and communities is a problem that has become quite widespread in our country. People usually come together to fight against this. There are several organisations across the country fighting for the rights of the displaced. In this chapter we will read about the Tawa Matsya Sangh – a federation of Fisherworker's cooperatives – an organisation fighting for the rights of the displaced forest dwellers of the Satpura forest in Madhya Pradesh.

छिंदवाड़ा जिले की महादेव पहाड़ियों से निकलने वाली तवा नदी, होशंगाबाद में नर्मदा से मिलने के लिए बैतूल होती हुई आती है। तवा पर एक बाँध का निर्माण 1958 में आरंभ हुआ और 1978 में पूरा हुआ। जंगल के बड़े हिस्से के साथ ही बहुत-सी कृषि भूमि भी बाँध में डूब गई, जिससे जंगल के निवासी अपना सब कुछ खो बैठे। इनमें से कुछ विस्थापितों ने बाँध के आस-पास रहकर थोड़ी-बहुत खेती के अलावा मछली पकड़ने का व्यवसाय आरंभ किया। यह सब करके भी वे बहुत थोड़ा-सा कमा पाते थे।

Originating in the Mahadeo hills of Chindwara district, the Tawa flows through Betul, before joining the Narmada in Hoshangabad. The Tawa dam began to be built in 1958 and was completed in 1978. It submerged large areas of forest and agricultural land. The forest dwellers were left with nothing. Some of the displaced people settled around the reservoir and apart from their meagre farms found a livelihood in fishing. They earned very little.

नदी पर बाँध ऐसी जगह पर बनाया जाता है जहाँ बहुत मात्रा में पानी इकट्ठा किया जा सके। ऐसा करने से एक जलाशय बन जाता है और जैसे-जैसे उसमें पानी भरता है, ज़मीन का एक बड़ा क्षेत्र उसमें डूब जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नदी पर बनाए गए बाँध की दीवार ऊँची होती है और उससे रुका हुआ पानी एक बड़े इलाके में फैल जाता है। यह फ़ोटो उत्तराखंड में टिहरी बाँध के बनने से डूब में आए इलाके की है। इस बाँध के कारण पुराना टिहरी शहर और 100 गाँव जिनमें से कुछ पूरी तरह और कुछ आंशिक रूप में पानी के नीचे समा गए। लगभग एक लाख लोग विस्थापित हो गए।

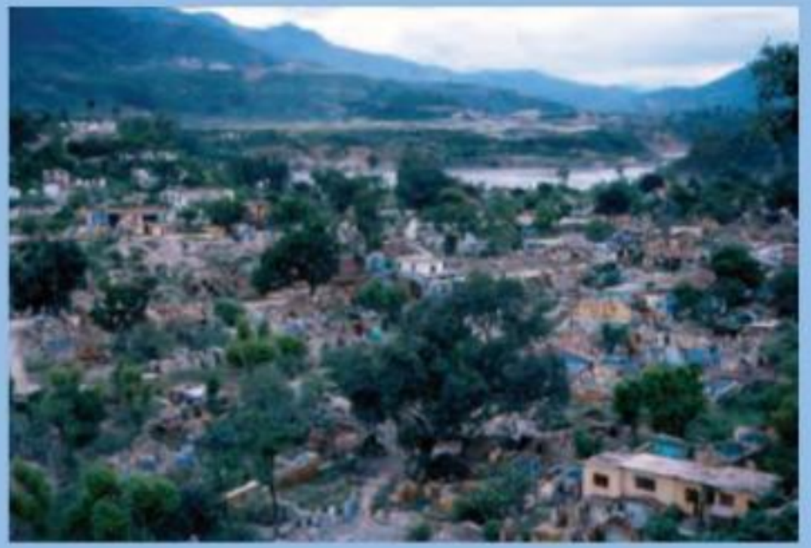

A dam is built across a river at sites where one can collect a lot of water. This forms a reservoir and as the water collects it submerges vast areas of land. This is because the wall of the dam across the river is high and the water spreads over a large area. This is a photo of the submergence caused by the Tehri dam in Uttarakhand. The old Tehri town and 100 villages, some totally and some partially, were submerged by this dam. Nearly one lakh people were displaced.

1994 में सरकार ने तवा बाँध के क्षेत्र में मछली पकड़ने का काम निजी ठेकेदारों को सौंप दिया। इन ठेकेदारों ने स्थानीय लोगों को काम से अलग कर दिया और बाहरी क्षेत्र से सस्ते श्रमिकों को ले आए। ठेकेदारों ने गुंडे बुलाकर गाँव वालों को धमकियाँ देना भी आरंभ कर दिया, क्योंकि लोग वहाँ से हटने को तैयार नहीं थे। गाँव वालों ने एकजुट होकर तय किया कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने और संगठन बनाकर सामने खड़े होने का वक्त आ गया है। इस तरह 'तवा मत्स्य संघ' नाम के संगठन को बनाया गया।

In 1994, the government gave the rights for fishing in the Tawa reservoir to private contractors. These contractors drove the local people away and got cheap labour from outside. The contractors began to threaten the villagers, who did not want to leave, by bringing in hoodlums. The villagers stood united and decided that it was time to set up an organisation and do something to protect their rights.

'तवा मत्स्य संघ' के संघर्ष का मुद्दा क्या था?

गाँव वालों ने यह संगठन बनाने की ज़रूरत क्यों महसूस की?

क्या आप सोचते हैं कि 'तवा मत्स्य संघ' की सफलता का कारण था, ग्रामीणों की बड़ी संख्या में भागीदारी? इस संबंध में 2 पंक्तियाँ लिखिए।

What issue is the Tawa Matsya Sangh (TMS) fighting for?

Why did the villagers set up this organisation?

Do you think that the large-scale participation of villagers has contributed to the success of the TMS? Write two lines on why you think so.

नवगठित 'तवा मत्स्य संघ' (टी.एम.एस.) ने सरकार से माँग की कि लोगों के जीवन निर्वाह के लिए बाँध में मछलियाँ पकड़ने के काम को जारी रखने की अनुमति दी जाए। यह माँग करते हुए 'चक्का जाम' शुरू किया गया। उनके प्रतिरोध को देखकर सरकार ने पूरे मामले की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की। समिति ने गाँव वालों के जीवनयापन के लिए उनको मछली पकड़ने का अधिकार देने

The newly formed Tawa Matsya Sangh (TMS) organised rallies and a *chakka jam* (road blockade), demanding their right to continue fishing for their livelihood. In response to their protests, the government created a committee to assess the issue.

आदिवासी
सहकारी संघ मर्यादित

की अनुशंसा की। 1996 में मध्य प्रदेश सरकार ने तय किया कि तवा बाँध के जलाशय से मछली पकड़ने का अधिकार यहाँ के विस्थापितों को ही दिया जाएगा। दो महीने बाद सरकार ने तवा मत्स्य संघ को बाँध में मछली पकड़ने के लिए पाँच वर्ष का पट्टा (लीज़) देना स्वीकार कर लिया। और इस तरह 2 जनवरी 1997 को तवा क्षेत्र के 33 गाँवों के लोगों के लिए 'नया साल' सही अर्थों में आरंभ हुआ।

The committee recommended that fishing rights be granted to the villagers for their livelihood. In 1996, the Madhya Pradesh government decided to give to the people displaced by the Tawa dam the fishing rights for the reservoir. A five-year lease agreement was signed two months later. On January 2, 1997, people from 33 villages of Tawa started the new year with the first catch.

सबसे ऊपर–टी.एम.एस. के सदस्य एक रैली में विरोध करते हुए।
ऊपर–सहकारी समिति की एक सदस्या मछली तोलती हुई।

*Top: Members of the TMS protesting at a rally. Above: A member of the cooperative weighing the fish.*

तवा मत्स्य संघ (टी.एम.एस.) के साथ जुड़कर मछुआरों ने लगातार अपनी आय में इज़ाफा दर्ज़ किया। यह इसलिए संभव हुआ कि उन्होंने एक सहकारी समिति बनाई, जो पकड़ी गई मछलियों की प्रत्येक खेप की उचित कीमत सीधे उन्हें देती है। यह सहकारी समिति इसके बाद की प्रक्रिया में भी शामिल होती है। सारा माल बाज़ार तक पहुँचाना और वहाँ भी उचित मूल्य प्राप्त करना समिति का ही काम है। ये मछुआरे अब पहले की तुलना में तीन गुना ज़्यादा

With the TMS taking over the fishworkers were able to increase their earnings substantially. This was because they set up the cooperative which would buy the catch from them at a fair price. The cooperative would then arrange to transport and sell this in markets where they would get a good price.

कमाने लगे हैं। तवा मत्स्य संघ ने 'जाल' खरीदने और रखरखाव की ज़रूरत के लिए मछुआरों को ऋण देने की भी व्यवस्था की है। मछुआरों के लिए अच्छी आमदनी प्राप्त करने के साथ-साथ तवा मत्स्य संघ ने इस बात की भी व्यवस्था की है कि जलाशय में मछलियों को ठीक ढंग से पलने बढ़ने की स्थितियाँ मिलें। टी.एम. एस. ने सभी के सामने यह बात सिद्ध कर दी है कि लोगों को जब आजीविका का अधिकार मिलता है, तो वे अच्छे प्रबंधन के गुणों का परिचय भी देते हैं।

They have now begun to earn three times more than they earned earlier. The TMS has also begun giving the fishworkers loans for repair and the buying of new nets. By managing to earn a higher wage as well as preserving the fish in the reservoir, the TMS has shown that when people's organisations get their rights to livelihood, they can be good managers.

क्या आप अपने जीवन से एक ऐसा उदाहरण याद कर सकते हैं, जिसमें किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों ने मिलकर असमानता की किसी स्थिति को बदला हो?

Can you think of an incident in your life in which one person or a group of people came together to change an unequal situation.

## असमानता के विरुद्ध रचनात्मक अभिव्यक्ति

कुछ लोग असमानता के विरुद्ध आंदोलनों में हिस्सा ले रहे होते हैं, तो कुछ और लोग असमानता के विरुद्ध अपनी कलम, अपनी आवाज़ या अन्य कलाओं, जैसे–नृत्य, संगीत आदि का प्रयोग ध्यान आकृष्ट करने के लिए करते हैं। लेखक, गायक, नर्तक और कलाकार भी असमानता के विरुद्ध संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अकसर ही कविताएँ, गीत और कहानियाँ न सिर्फ़ हमें प्रेरित करती हैं बल्कि वे समानता में हमारे विश्वास को दृढ़ भी करती हैं। वे न सिर्फ़ हमें प्रेरित करती हैं बल्कि हमें सही दिशा में चलना भी सिखाती हैं।

## Creative expression against inequality

While some join protest movements to fight inequality, others might use their pen, or their voice, or their ability to dance to draw attention to issues of inequality. Writers, singers, dancers and artists have also been very active in the fight against inequality. Often, poems, songs and stories can also inspire us and make us believe strongly in an issue and influence our efforts to correct the situation.

यहाँ प्रस्तुत यह गीत विनय महाजन द्वारा 'सूचना के अधिकार' के अभियान में लिखा गया:

## जानने का हक

मेरे सपनों को ये जानने का हक रे...
क्यूँ सदियों से टूट रहे हैं, इन्हें सजने का नाम नहीं

मेरे हाथों को ये जानने का हक रे...
क्यूँ बरसों से खाली पड़े हैं, इन्हें आज भी काम नहीं

मेरे पैरों को ये जानने का हक रे...
क्यूँ गाँव-गाँव चलना पड़े है, क्यूँ बस का निशान नहीं

मेरी भूख को ये जानने का हक रे...
क्यूँ गोदामों में सड़ते हैं दाने, मुझे मुट्ठी-भर धान अन्य नहीं

मेरी बूढ़ी माँ को ये जानने का हक रे...
क्यूँ गोली नहीं सुई, दवाखाने, पट्टी-टाँके का सामान नहीं

मेरे बच्चों को ये जानने का हक रे...
क्यूँ रात-दिन करें मज़दूरी, क्यूँ शाला मेरे गाँव में नहीं

*Adaptation of a song written as part of the Right to Information campaign by Vinay Mahajan:*

## The Right To Know

*My dreams have the right to know*
*Why for centuries they have been breaking*
*Why don't they ever come true*

*My hands have the right to know*
*Why do they remain without work all along*
*Why do they have nothing to do*

*My feet have the right to know*
*Why from village to village they walk on their own*
*Why are there no signs of a bus yet*

*My hunger has the right to know*
*Why grain rots in godowns*
*While I don't even get a fistful of rice*

*My old mother has the right to know*
*Why are there no medicines*
*Needles, dispensaries or bandages*

*My children have the right to know*
*Why do they labour day and night*
*Why is there no school in sight*

उपर्युक्त गीत में से आपको कौन-सी पँक्ति प्रिय लगी?

'मेरी भूख को ये जानने का हक रे' इस पँक्ति से कवि का आशय क्या हो सकता है?

क्या आप अपनी भाषा में अपने क्षेत्र में प्रचलित कोई ऐसा गीत या कविता कक्षा में सुना सकते हैं, जिसमें मनुष्य की समता और गरिमा का वर्णन मिलता हो?

What is your favourite line in the above song?

What does the poet mean when he says, "My hunger has the right to know"?

Can you share with your class a local song or a poem on dignity that is from your area?

## भारत का संविधान–एक जीता हुआ दस्तावेज़

न्याय के लिए किसी आंदोलन और समानता के लिए गीत और कविता की तमाम प्रेरणाओं के पीछे जो एक भाव होता है, वह मनुष्य की समता का ही होता है। आप यह जानते ही हैं कि भारत का संविधान हम सभी को समान मानता है। देश में समता के लिए चलने वाले आंदोलन और संघर्ष अकसर संविधान के आधार पर ही समता और न्याय की बात करते हैं। तवा मत्स्य संघ के मछुआरों की आशा का आधार भी संविधान के प्रावधान ही हैं। अपनी बातचीत में लगातार संविधान का ज़िक्र करने से वे उसे एक ऐसे जीते हुए दस्तावेज़ की तरह उपयोग कर रहे हैं, जो हमारे जीवन में सचमुच अर्थ रखता हो। लोकतंत्र में कई व्यक्ति और समुदाय लगातार इस दिशा में कोशिश करते हैं कि लोकतंत्र का दायरा बढ़ता जाए और अधिक से अधिक मामलों में समानता लाने की ज़रूरत को स्वीकार किया जाए।

## The Indian Constitution as a living document

The foundation of all movements for justice and the inspiration for all the poetry and songs on equality is the recognition that all people are equal. As you know, the Indian Constitution recognises the equality of all persons. Movements and struggles for equality in India continuously refer to the Indian Constitution to make their point about equality and justice for all. The fishworkers in the Tawa Matsya Sangh hope that the provisions of the Constitution will become a reality through their participation in this movement. By constantly referring to the Constitution they use it as a 'living document', i.e., something that has real meaning in our lives. In a democracy, there are always communities and individuals trying to expand the idea of democracy and push for a greater recognition of equality on existing as well as new issues.

समता का मूल्य लोकतंत्र के केंद्र में है। इस पुस्तक में हमने ऐसे कुछ मुद्दों को देखने का प्रयास किया है जो लोकतंत्र के इस मूलभाव के लिए चुनौती पैदा करते हैं। जैसा कि आपने पढ़ा देश की स्वास्थ्य सेवाओं का निजीकरण, संचार के माध्यमों (मीडिया) पर व्यावसायिक घरानों का बढ़ता दबाव और नियंत्रण, महिलाओं के श्रम को कम मूल्य देना और कपास के किसानों की बेहद कम आय होना ये सब लोकतंत्र के लिए चुनौतियाँ हैं। ये वे मुद्दे हैं जो सीधे गरीबों को प्रभावित करते हैं और समाज में उपेक्षित समुदायों से जुड़े हुए हैं। ये देश में सामाजिक और आर्थिक समानता से जुड़े मुद्दे हैं।

Issues of equality are central to a democracy. In this book, we have tried to highlight issues that pose a challenge to this idea of equality in a democracy. These, as you have read, include the privatisation of health services in the country, the increasing control that business houses exert on the media, the low value given to women and their work, and the low earnings made by small farmers who grow cotton. These issues substantially affect poor and marginalised communities, and therefore, concern economic and social equality in the country.

2001 में लखनऊ में 1500 से ज्यादा लोग महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा का विरोध करने के लिए एक जन-सुनवाई में इकट्ठे हुए। इसमें प्रतिष्ठित महिलाओं की एक ज्यूरी बनाई गई और उन्होंने न्यायाधीशों की भूमिका निभाते हुए महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा के 15 से ज़्यादा प्रकरणों की सुनवाई की। लोगों की इस ज्यूरी ने इस सच्चाई को उभारने में मदद की कि कानून व्यवस्था में हिंसा के खिलाफ न्याय की माँग करने वाली महिलाओं को कितना कम सहयोग मिल पाता है।

*Over 1,500 persons attended a public hearing in Lucknow in 2001 to protest violence against women. Over 15 cases of violence against women were heard by a jury of eminent women who played the role of judges. This people's jury helped highlight the lack of support in the legal system for women who seek justice in such cases.*

लोकतंत्र के लिए समता और उसके लिए संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। व्यक्ति और समुदाय का स्वाभिमान और गरिमा तभी बनी रह सकती है जब उसके पास अपनी और परिवार की सभी ज़रूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन हों और उनके साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाए।

This is the core of the struggle for equality in a democracy. The dignity and self-respect of each person and their community can only be realised if they have adequate resources to support and nurture their families and if they are not discriminated against.

समानता के लिए लोगों के संघर्ष में हमारे संविधान की क्या भूमिका हो सकती है?

क्या आप एक छोटे समूह में समानता के लिए एक सामाजिक विज्ञापन तैयार कर सकते हो?

What role does the Constitution play in people's struggles for equality?

Can you make up a social advertisement on equality? You can do this in small groups.

धन्यवाद